

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखि न संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५३ रुप (१३५)

ग्रंथ नाम हनुमाटक.

विषय मराठी काव्य.



ग्रा. ३०

मराठी
५१६। य १९३५

का०५

राधवान दासामुखी



संस्कृत
भाषा

२८८

जो Rajawade Se Shashan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan
Digit Project Initiated by Munirabi, Munirabi, Munirabi

॥ जायोनि श्री नमो हस्पेरं ॥ करता कीव्य महामंत्रं श्रवण
 ॥ निकरि बिजा व्यारु पुरः श्रवण मादिलं ॥१॥ कीजा भा
 ॥ नेतु निक्रम उक्तम बि ॥ स्तिता योगी जीप हुडलि ॥ जा
 ॥ यो निश्चीरा मग की यावल्ली ॥ श्रोत्र मस्तकि वर्ति
 ॥ २३॥ सक्षेधन गर्जतां ॥ इच्छक लिजा ग्रति विद्युत्तु
 ॥ ता ॥ मगते मुख पीठ चीद वता ॥ खउ बउ नि नुगी लि
 ॥ १३॥ संनीध देखु निरधु नंदन ॥ ग्रण मीदेखते का
 ॥ ग्रस्वन्ना ॥ माया पुरा गले रमण ॥ आयो व्ये माजी मी
 ॥ आसें ॥१४॥ केह तीढु धर भांति ॥ साव चीभा सेर धु
 ॥ नाथ मुति ॥ कीवा सकुड़पुले पति ॥ लणो निर्खमी जा
 ॥ ला उरासें ॥१५॥ विनाम सुपेहे माया पुरा ॥ साव चमिकौ
 ॥ सल्लाकुमर ॥ युधि संकर माड़िलि थोरा ॥ लणो निल
 ॥ ला उराणी ले उरासें ॥१६॥ उरास ख्य माझ बाप मार
 ॥ जिक्रित शमुख अजगर ॥ विज्ञय जब चरांगा द्वे सढ़ी
 ॥ वरा ॥ उरुन दि मस्तकि ॥१७॥ निशा र चर लै सायी येही
 ॥ ती ॥ जाणो निगाजी त्सा चौन्य स्तर पंकी ॥ तया ते तु नापर
 ॥ जोती ॥ सामर्थ्ये तु क्वेनि वठवें ॥१८॥ अतां न लाउ निया
 ॥ उसीरा ॥ नीथन मधे शत रामिष्ठ औ स्तरा ॥ कीज मंत
 ॥ पान उल्ला सुर ग-
 ॥ इंतात श्रवण स्त्रा
 ॥ व्यारेन लहु ना
 ॥ हरिहार चेध्य येह
 ॥ लयलय आना दिआ
 ॥ १॥ ब्रिंसा इघट प्रसव न इरा इयजय आरपन
 ॥ वर्ण्ये चिपुरे खयजये निगुण निरकार आजरा म
 ॥ रुजन मो ॥२॥ समाप्त होतं खवन चेना नैव य
 ॥ वापिल इनुष्ववाणा गधालु नियला टांगणा कुपा
 ॥ चिन्तेन तसे ॥३॥ दिरवो निभ तिइ आनन्द्येत ॥४॥ संतु
 ॥ इलि तेजग न्मता ॥ लणो प्रकहु निशा मर्थ्ये सावता
 ॥ निशा खरता निवटिना ॥५॥ ऐसे बोलो निभाहा शा
 ॥ गिभजा निर्घुमिआतो तिग चढ़मूजा चिआ
 ॥ ग्रह ति ॥ धरति तालि प्यास्तरा ॥ खपासां कुराधनु बी
 ॥ ण ॥ युरिं वस किल रणस्तुरण ॥ पाकलंते तिवठा
 ॥ गण ॥ मादु नियाठाकलि ॥७॥ मग संहार वन्हिवा
 ॥ गल ॥ दिव्यवाठलि आंतराला ॥ राष्ट्रो सुकुप्रल
 ॥ ग्येतला ॥ शोशावयाल ॥ युक्ति ॥८॥ ब्रिंसे देसि मह
 ॥ गदा काशा ॥ गिछीलि जेसे आकु तवेषा गदा वितता
 ॥ गपाहु निरोषा ॥ सुरपर चृष्टि कांपति ॥९॥ शत मुखा
 ॥ लक्ष्मि निसन्मुख गकामु कियेक विसामेका ॥ कापो
 ॥ निसो उतायेकेक प्रस्तु निलत्वे शतवरि ॥१०॥ ति

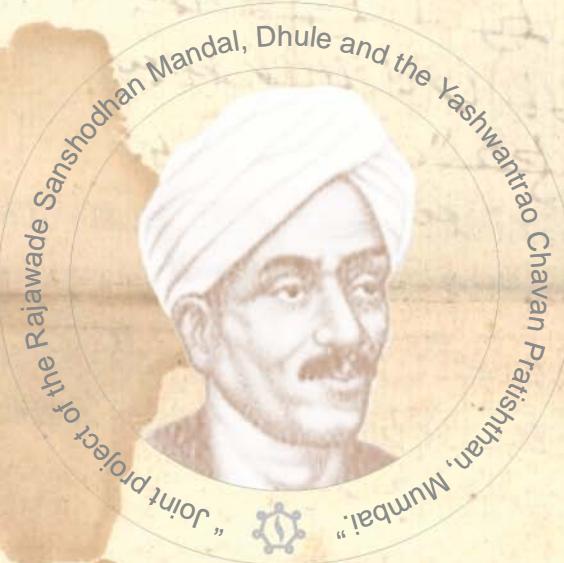
॥ गजीकां ॥१॥ अया परि
 ॥ हुस्तुती पूजन ॥ वणो
 ॥ गमा उत्तरा ॥१०॥

॥ लयर स्त्रपश्चानुभुती ॥
 ॥ त्रिपप्ता सुर दुजने म

॥ चिन्तेन तसे ॥३॥ दिरवो निभ तिइ आनन्द्येत ॥४॥ संतु
 ॥ इलि तेजग न्मता ॥ लणो प्रकहु निशा मर्थ्ये सावता
 ॥ निशा खरता निवटिना ॥५॥ ऐसे बोलो निभाहा शा
 ॥ गिभजा निर्घुमिआतो तिग चढ़मूजा चिआ
 ॥ ग्रह ति ॥ धरति तालि प्यास्तरा ॥ खपासां कुराधनु बी
 ॥ ण ॥ युरिं वस किल रणस्तुरण ॥ पाकलंते तिवठा
 ॥ गण ॥ मादु नियाठाकलि ॥७॥ मग संहार वन्हिवा
 ॥ गल ॥ दिव्यवाठलि आंतराला ॥ राष्ट्रो सुकुप्रल
 ॥ ग्येतला ॥ शोशावयाल ॥ युक्ति ॥८॥ ब्रिंसे देसि मह
 ॥ गदा काशा ॥ गिछीलि जेसे आकु तवेषा गदा वितता
 ॥ गपाहु निरोषा ॥ सुरपर चृष्टि कांपति ॥९॥ शत मुखा
 ॥ लक्ष्मि निसन्मुख गकामु कियेक विसामेका ॥ कापो
 ॥ निसो उतायेकेक प्रस्तु निलत्वे शतवरि ॥१०॥ ति

गदाधवानं दा वाऽनाशो द्वा भूयति वा कुपाष्ठसा
गदासु स्त्राहिस्यो वियाच्छेदा निरोपणालालंसपु
रा । १३२८८६ ४७३०

(2)



॥ जानंत्रब्रह्माऽचिरचना ॥ संकल्पत्रैसम्बोङ् ॥
 ॥ यत्तेजादिशक्तीविजोति ॥ इत्विलशतमुखवर्कुर्म् ॥
 ॥ मात्रति ॥ श्रीरामस्तप्यांयांसंकर्गति ॥ उकारायग्ने ॥
 ॥ आघरिता ॥ ७६ ॥ वर्मनेणसिरघुपति ॥ तेविजोतिजा ॥
 ॥ नकीसति ॥ तीतेजप्तिसिध्रगति ॥ नमस्करनिप्राथी
 ॥ का ॥ ७७ ॥ मुनिववनोक्तीष्युष्पान ॥ घडतातोऽ
 ॥ लारजीवनयनम् कपिद्रालग्निकरज्ञेतुन ॥ विनय
 ॥ शब्दविनता ॥ ७८ ॥ आलं सहीतपरिकारा ॥ अत्प्रे ॥
 ॥ शत्किनेकेल्पुगा ॥ आतोऽतीववत्यवयवात्मा ॥ तु
 ॥ वकिलीपाहीजें ॥ ७९ ॥ आयोध्येजातुनिपवनबांग
 ॥ अरा ॥ ज्ञानकीद्रोणावका ॥ आशाहोताचरणकम्भे
 ॥ अकर्षिलेमाध्यारे ॥ ८० ॥ शतवदनत्रासुनिरामवा
 ॥ ग्नें ॥ उरापारकप्रिवारसधान ॥ तेवारितरघुनंदनरप्पा
 ॥ गप्ति ॥ उभाजासें ॥ ८१ ॥ यरिकेअयोध्यापुरि ॥ सी
 ॥ लानिद्रिस्तानिजमंदिरि ॥ देखुनिकपीमनसागरि ॥
 ॥ युक्तमोतेधुडीत ॥ ८२ ॥ लोकेलीयाशब्दघोषीनिहामंगा
 ॥ चालागलादोषालामि ॥ तेसीकरस्मर्दा ॥ करनये
 ॥ सर्वथी ॥ ८३ ॥ मर
 ॥ गद्धा ॥ जनकामुड
 ॥ पुरी ॥ ८४ ॥ कोकपे
 ॥ गद्धननोकाहीव्युजो
 ॥ ती ॥ उणीलेफर्तीउतप्या ॥ ८५ ॥ कितोकपिंड
 ॥ सुपाडी ॥ करस्तृष्टीक्षीलिज्ञानारायणा घउनि
 ॥ यांरणसरोवरस्थान ॥ यकैचिपाठतेपातला
 ॥ ८६ ॥ घाविरावघुनाथगिल्लु ॥ जाप्तितसेश
 ॥ तिर्णीर्णनत्र ॥ तयेकाछ्लिप्तितास्त्रिधर ॥ भल
 ॥ धावज्याधावला ॥ ८७ ॥ धामेउठनियांजा
 ॥ वन्नि ॥ हनुमलझणकोदंडपाढि ॥ नि
 ॥ द्रुष्टादृखोनिजगजन्ननि ॥ मंदिरासह
 ॥ तज्जाग्निलि ॥ दृढ़जाग्निनिश्चरामठत
 ॥ विल ॥ प्रवेशालासदनदृत्वा ॥ वोवर्गि
 ॥ अस्त्रिदृत्वकिल ॥ दृखतालालोत्तराचनि
 ॥ ८९ ॥ स्वप्नजाग्रतिउपाधि ॥ निरसुनिशुश्रुप्ते
 ॥ समाधी ॥ सवितसंजगहानंदिंगतुछिका
 ॥ विठिलयस्तु ॥ ९० ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com